भारत सरकार/Govt. of India
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय/Ministry of Earth Sciences
भारत मौसम विज्ञान विभाग/India Meteorological Department
मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ/Meteorological Centre Lucknow

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

EXTENDED RANGE FORECAST FOR UTTAR PRADESH

Current weather status & outlook for next two weeks (27th June 2025–10th July 2025)

Dated: 27th June, 2025

Time of Issue: 1500 hours IST

1) Rainfall Scenario (Realized):

(i) Seasonal Rainfall Scenario

Monsoon Season: -

	Period	Rainfall (mm's)	Normal (mm's)	Departure (%)
Uttar Pradesh	01st June 2025	75.6	68.3	+11 %
East- Uttar Pradesh	To	72.5	76.9	-06 %
West- Uttar Pradesh	26th June 2025	79.9	56.3	+42 %

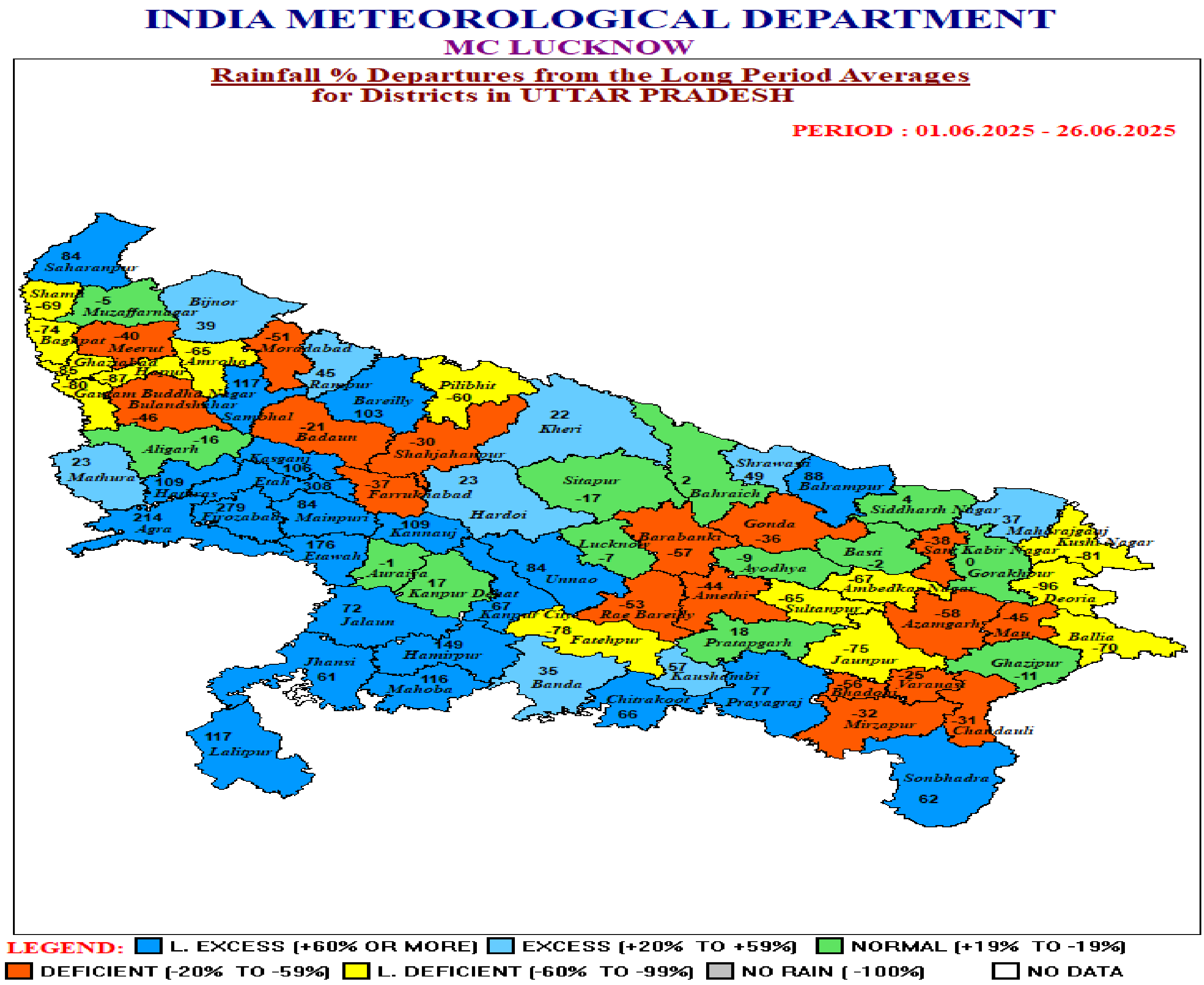

भारत सरकार/Govt. of India
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय/Ministry of Earth Sciences
भारत मौसम विज्ञान विभाग/India Meteorological Department
मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ/Meteorological Centre Lucknow

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

(ii) Weekly Rainfall Scenario

	Period	Rainfall (mm's)	Normal (mm's)	Departure (%)
Uttar Pradesh	20th June 2025	44.5	29.2	+52 %
East- Uttar Pradesh	To	46.9	33.6	+40 %
West- Uttar Pradesh	26th June 2025	41.0	22.9	+79 %

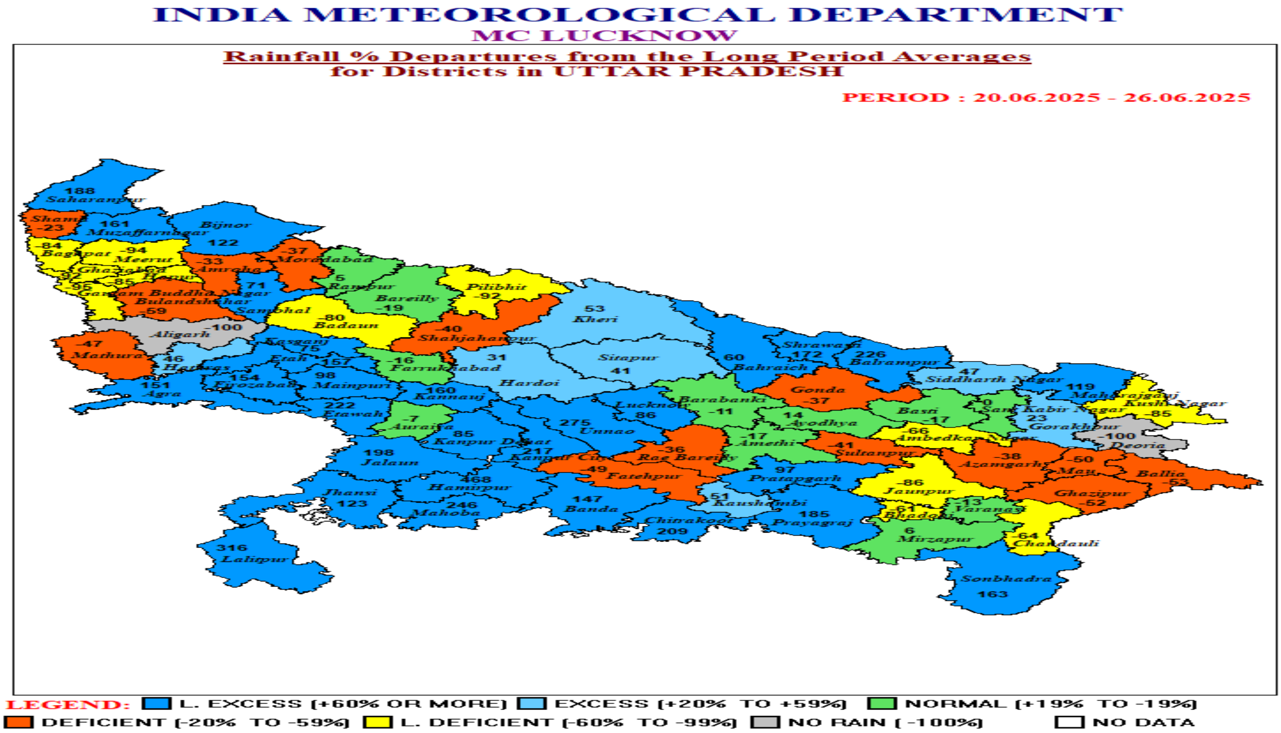

औसत अधिकतम तापमान 20.06.2025 to 26.06.2025

औसत न्यूनतम तापमान 20.06.2025 to 26.06.2025

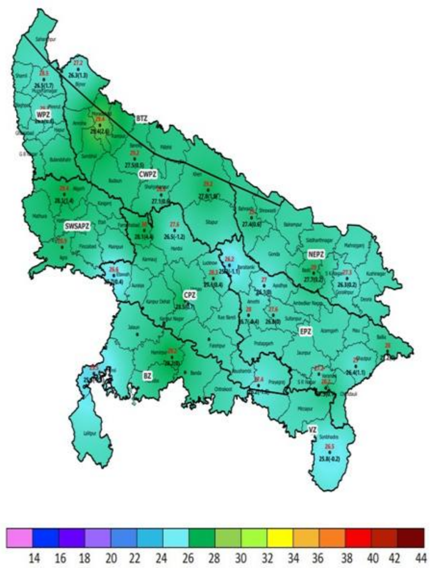

Rainfall forecast for Week-1: (27th June 2025–03rd July 2025)

Light to Moderate rain/Thundershower activities are likely at many/most places of the state during the week. Rainfall activity is very likely to be ABOVE NORMAL over Western and Southern parts of UP and NEAR NORMAL over the rest parts of UP. Heavy Rainfall is very likely to occur at isolated places of the state with very Heavy falls in Northern and Southern parts of the state during the week.

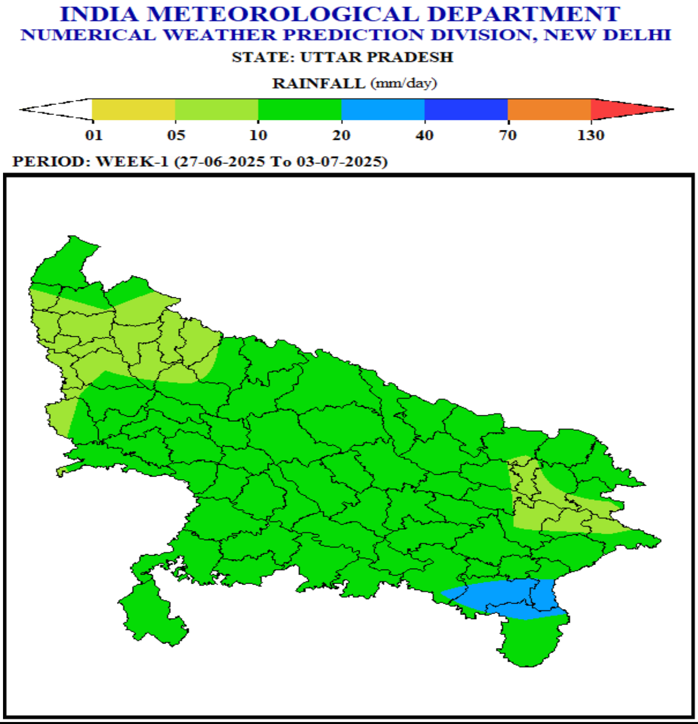

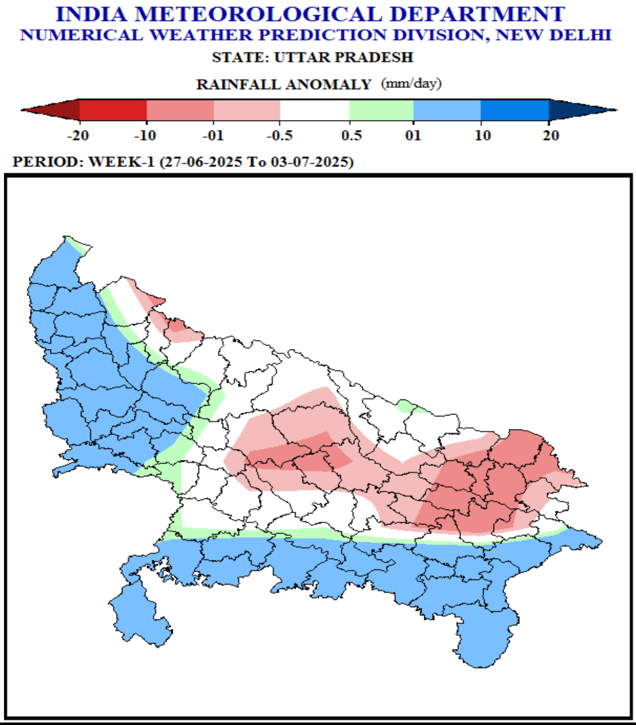

Rainfall forecast for Week-2: (04th July 2025–10th July 2025)

Fairly widespread to Widespread rainfall activity is likely to result in ABOVE NORMAL activity over many parts of the State during the week except Northern and Eastern parts where it is likely to be Slightly BELOW NORMAL.

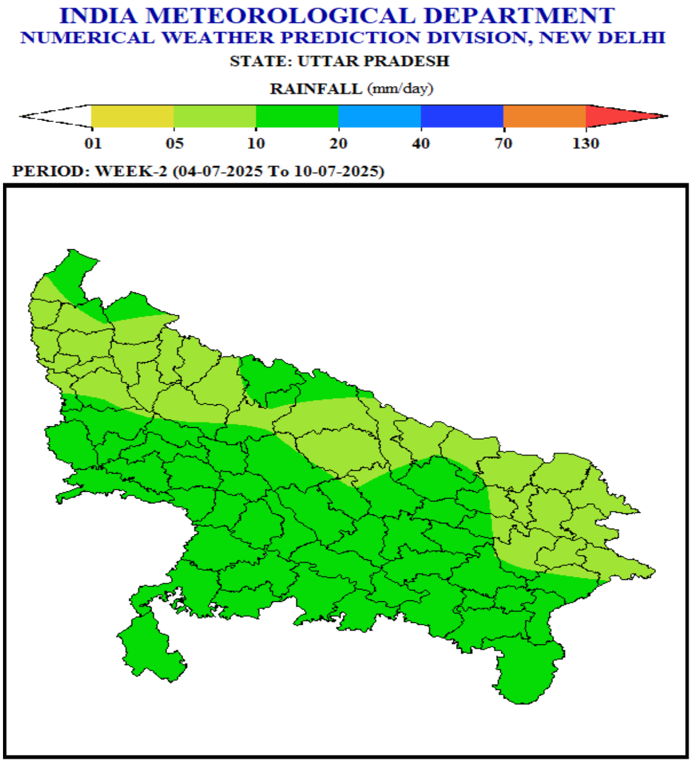

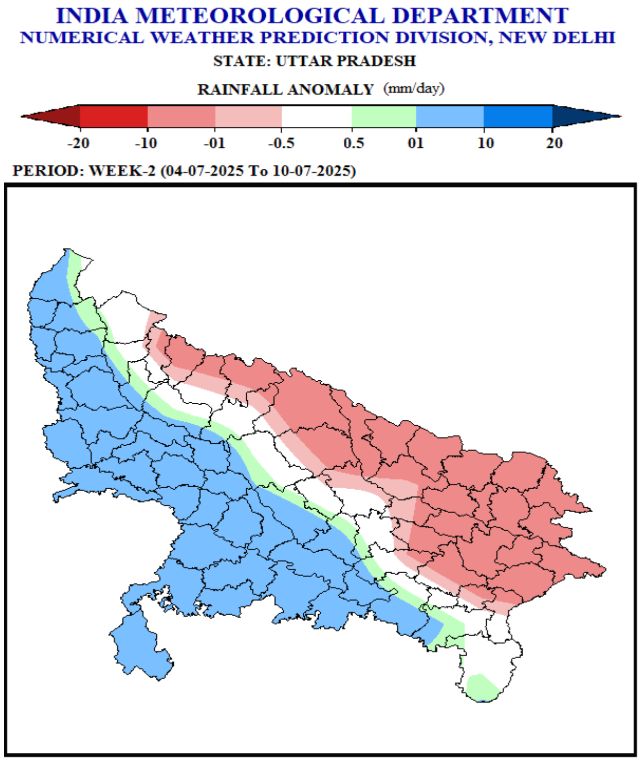

Maximum Temperature forecast for Week-1: (27th June 2025–03rd July 2025)

Gradual fall of 2-4 °C is likely in Maximum temperatures during next 2-3 days resulting in NEAR NORMAL average weekly maximum temperatures over many parts of the state except extreme Western and southern parts, where these are likely to be BELOW NORMAL to APPRECIABLY BELOW NORMAL.

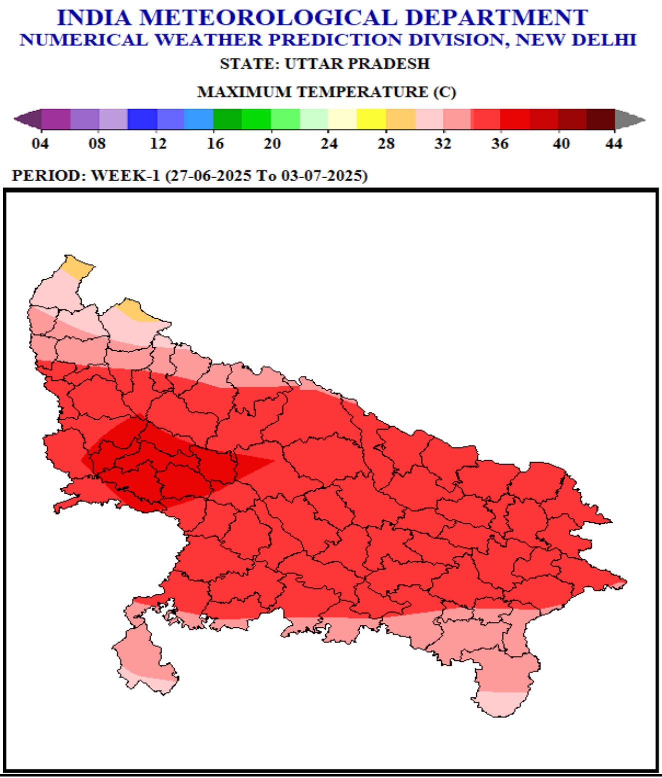

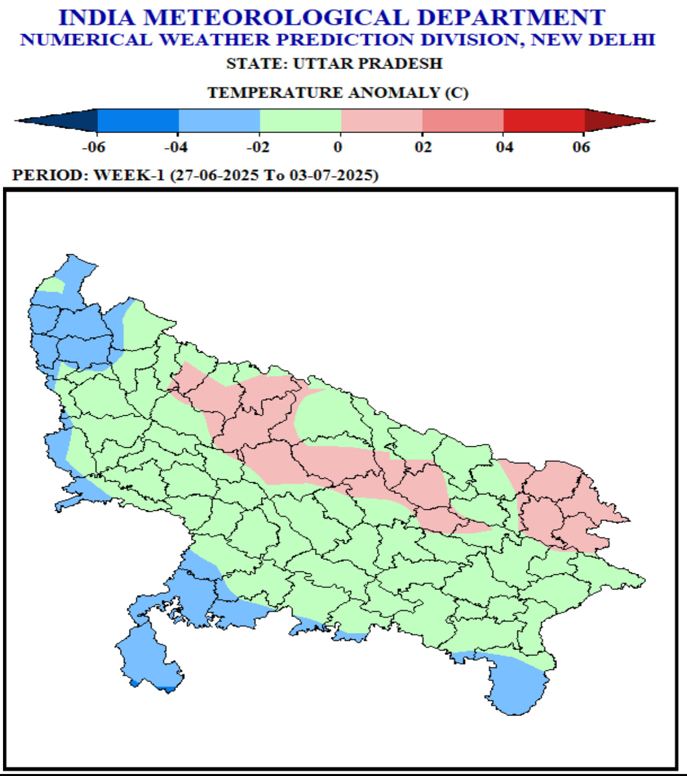

Maximum Temperature forecast for Week-2: (04th July 2025–10th July 2025)

NEAR NORMAL average weekly maximum temperatures are likely over many parts of the state except extreme Western parts, where these are likely to be BELOW NORMAL to APPRECIABLY BELOW NORMAL.

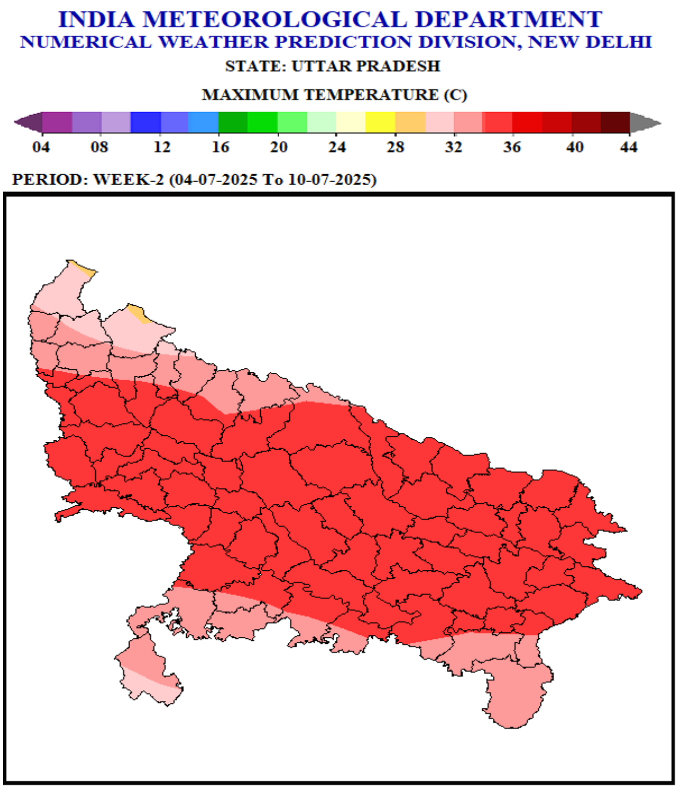

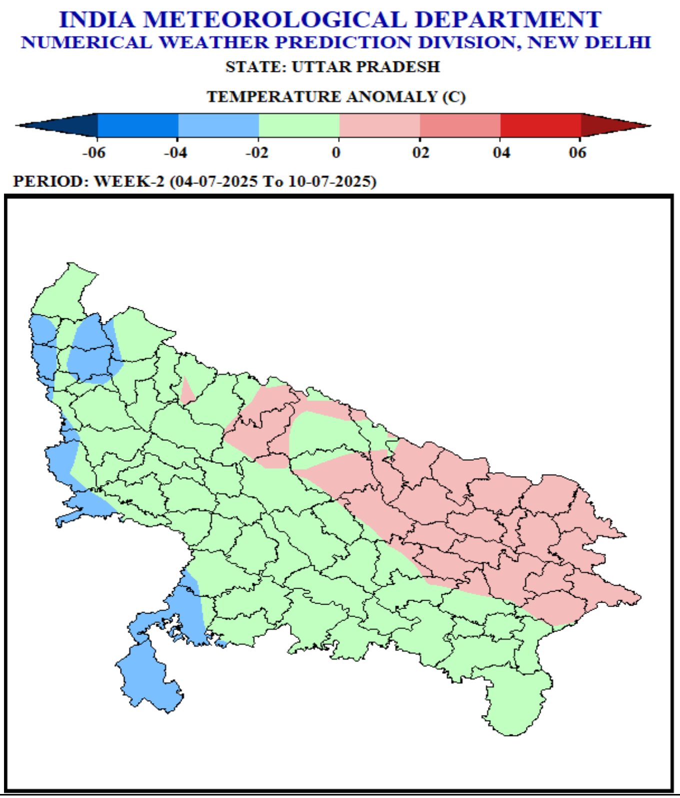

भारत सरकार/Govt. of India
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय/Ministry of Earth Sciences
भारत मौसम विज्ञान विभाग/India Meteorological Department
मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ/Meteorological Centre Lucknow

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

Minimum Temperature forecast for Week-1: (27th June 2025–03rd July 2025)

Average Weekly Minimum temperatures are likely to be NEAR NORMAL over the state.

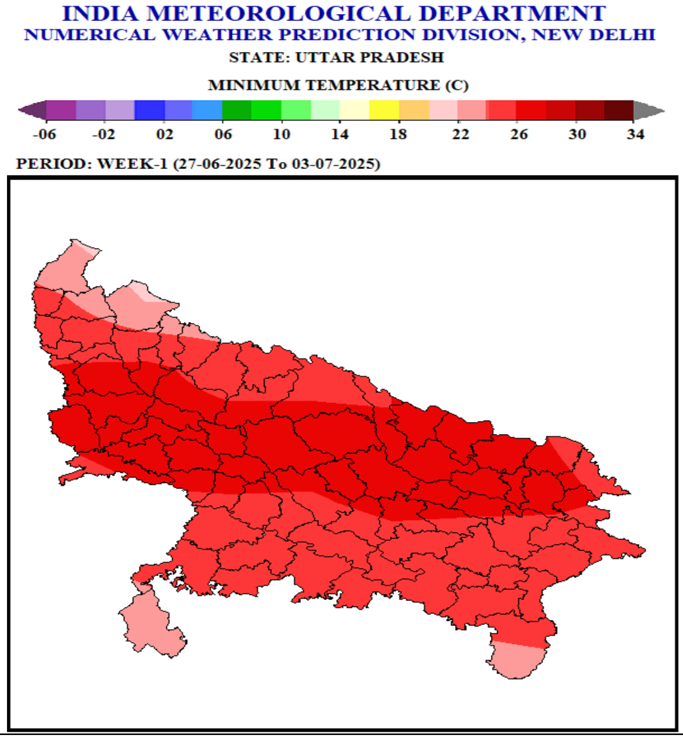

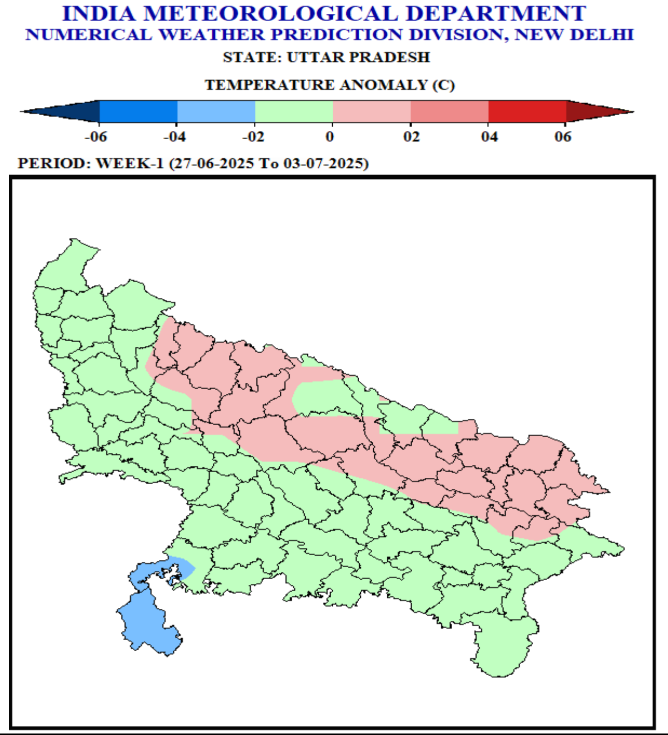

Minimum Temperature forecast for Week-2: (04th July 2025–10th July 2025)

Average Weekly Minimum temperatures are likely to be NEAR NORMAL over the state.

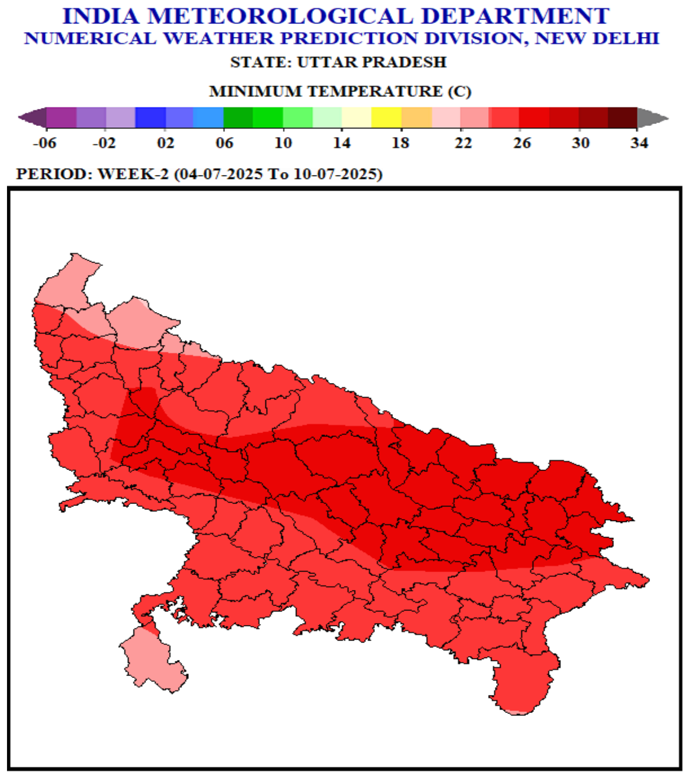

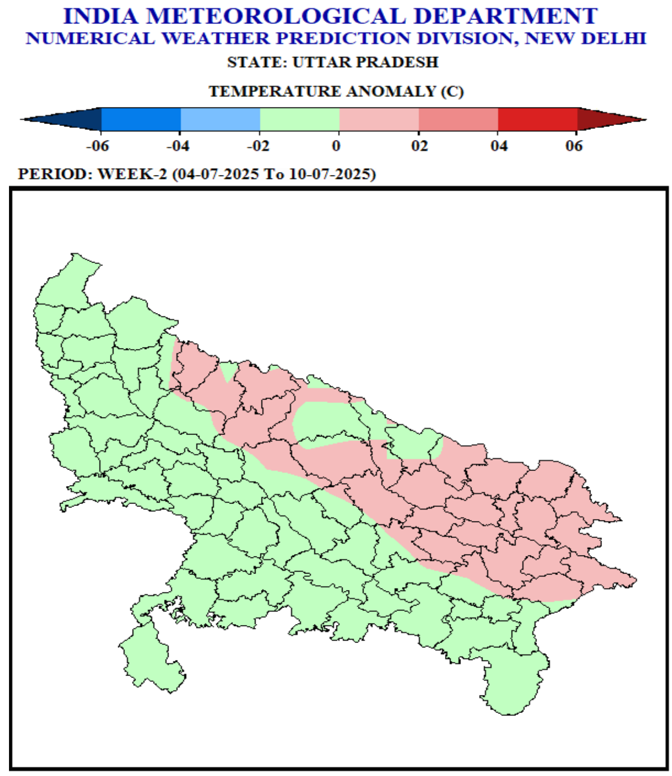

उत्तर प्रदेश के लिए विस्तारित अवधि कृषि मौसम पूर्वानुमान

2) मुख्य सिनाप्टिक परिस्थितियां :-

- दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगामी 2-3 दिनों के दौरान प्रदेश के शेष भागों में आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल हैं|
- मानसून की उत्तरी सीमा (NLM) 27.0° उ. अक्षांश/ 68.5° पू. देशांतर, 27.0° उ. अक्षांश/ 70.0° पू. जैसलमेर, बीकानेर, झुंझुनू, भरतपुर, रामपुर, सोनीपत, अनुपनगर और 29.0° उ. अक्षांश/ 70.0° पू. देशांतर से होकर गुजर रही है|
- दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान से पूर्वी राजस्थान, उत्तरी मध्य प्रदेश, उत्तरी झारखण्ड, गांगेय पश्चिमी बंगाल होते हुए बांग्ला देश तक बनी पूर्वी-पश्चिमी मौसमी द्रोणी मध्य क्षोभ मंडल तक विस्तृत है |

3) आगामी दो सप्ताह के लिए वर्षा का पूर्वानुमान/दृष्टिकोण:-

(27 जून 2025– 03 जुलाई 2025):-

- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के ज्यादातर भाग में मेघगर्जन/वज्रपात के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने से दक्षिणी एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सामान्य से अधिक वर्षा जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य के आस-पास होने की संभावना है।

(04 जुलाई 2025– 10 जुलाई 2025):-

- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के भाभर तराई, पूर्वी मैदानी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में सामान्य से आंशिक रूप से कम जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है|

4) मौसम चेतावनी :-

- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में मेघगर्जन/वज्रपात के साथ कहीं-कहीं भारी वर्षा तथा प्रदेश के दक्षिणी एवं तराई इलाकों में कहीं-कहीं बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है।

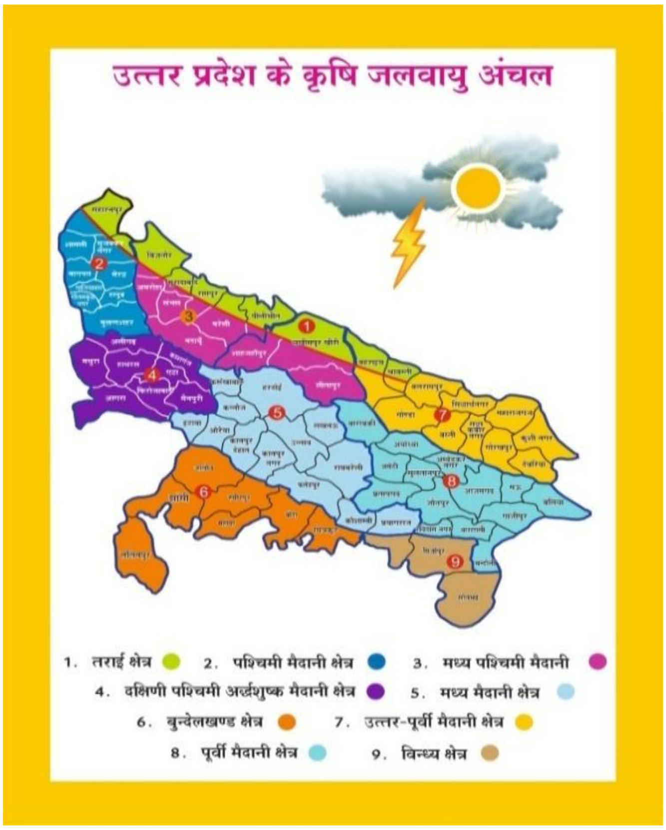

5) आगामी दो सप्ताह हेतु अधिकतम तापमान का पूर्वानुमान:-

(27 जून 2025– 03 जुलाई 2025):-

- प्रदेश के **बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में** औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान **सामान्य से (2 से 4°C) कम** जबकि प्रदेश के **अन्य कृषि जलवायु अंचलों** में यह **सामान्य के आस-पास या सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2°C) कम** रहने की संभावना है।
- प्रदेश के **भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग,पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिणी भाग** एवं **विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में** औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान **31 से 34°C; दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग** में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान **36 से 38°C** जबकि प्रदेश के **अन्य कृषि जलवायु अंचलों** में यह **34 से 36°C** रहने की संभावना है।

(04 जुलाई 2025– 10 जुलाई 2025):-

- प्रदेश के **भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग** में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान **सामान्य से (2 से 4°C) कम; उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में** औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान **सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2°C) अधिक** जबकि प्रदेश के **अन्य कृषि जलवायु अंचलों** में यह **सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 °C) कम** रहने की संभावना है।
- प्रदेश के **भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग** में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान **30 से 32°C; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिणी भाग** एवं **विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में** औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान **32 से 34°C** जबकि प्रदेश के **अन्य कृषि जलवायु अंचलों** में यह **34 से 36°C** रहने की संभावना है।

6) आगामी दो सप्ताह के लिए न्यूनतम तापमान का पूर्वानुमान/दृष्टिकोण:-

(27 जून 2025– 03 जुलाई 2025):-

- प्रदेश के **समस्त कृषि जलवायु अंचलों** में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान **सामान्य के आस-पास** रहने की संभावना है।
- प्रदेश के **भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में** औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान **22 से 24 °C; दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग तथा मध्य मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में** औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान **26 से 28 °C** जबकि **अन्य कृषि जलवायु अंचलों में** यह **24 से 26°C** रहने की संभावना है।

(04 जुलाई 2025– 10 जुलाई 2025):-

- प्रदेश के **समस्त कृषि जलवायु अंचलों** में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान **सामान्य के आस-पास** रहने की संभावना है।
- प्रदेश के **भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में** औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान **22 से 24 °C; उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग** तथा **दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी, मध्य मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में** औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान **26 से 28 °C** जबकि **अन्य कृषि जलवायु अंचलों में** यह **24 से 26°C** रहने की संभावना है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं :-

धान की खेती :-

- धान की कम अवधि (110 से 125 दिन) की उन्नत किस्मों सी.ओ.-51, नरेन्द्र-80, आई.आर.-50, नरेन्द्र-97, पंत धान-12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान-2, मालवीय धान-917, शियाट्स धान-5 की नर्सरी डालें अथवा सीधी बुवाई करें।
- धान की 20-25 दिन वाली पौध की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 40-50 हिल तथा 2-3 पौधा प्रति हिल 3-4 सेमी. की गहराई तक करें।
- नर्सरी में जिंक की कमी के कारण होने वाले खैरा रोग जिसमें पत्तियां पीली पड़ जाती है एवं बाद में कत्थई रंग के धब्बे पड़ जाते है, लक्षण दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल के साथ अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करें।
- नर्सरी में लौह तत्व की कमी के कारण होने वाले सफेदा रोग, जिसमें पत्तियां कागज के समान सफेद रंग की निकलती है, के नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी घोल के साथ छिड़काव करें।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चैड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3-4 लीटर अथवा प्रेरेटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नाजिल से 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 1-2 दिन के अन्दर छिड़काव करें।

अरहर की खेती :-

- अरहर की देर से पकने वाली उन्नतशील किस्मों यथा नरेन्द्र अरहर 2, मालवीय चमत्कार, राजेन्द्र अरहर-2, मालवीय विकास, पूसा 9, आजाद, नरेन्द्र अरहर 1, अमर, बहार, आई.पी.ए.-206, पूसा अरहर 151 तथा आई.पी.ए.-15-2 की बुवाई मेढ़ों पर करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा +1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

श्री अन्न की खेती :-

- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.-13, सी.एस.वी.-15, एस.पी.बी.-1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.-16, सी.एस.एच.-9, सी.एस.एच.-14, सी.एस.एच.-18, सी.एस.एच.-13 व सी.एस.एच.-23 के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के अंतिम सप्ताह में बुवाई की जा सकें।
- सावां की प्रजाति टी-46, आई.पी.-149, यू.पी.टी.-8, आई.पी.एम.-97, आई.पी.एम.-100, डी.एच.बी.एम.-93-3, डी.एच.बी.एम.-33-3 की बुवाई करें।
- कोंदो की प्रजाति जे.के.-6, जे.के.-62, जे.के.-2, ए.पी.के.-1, जे.पी.वी.के.-3 की बुआई करें।
- बाजरा, ज्वार व कोंदो में बीज जनित रोग अरगट की रोकथाम हेतु बीज को बोने से पहले 20 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर तुरंत अरगट से ग्रसित बीजों को अलग कर दें तथा शुद्ध पानी से 4 से 5 बार धोकर बीज का प्रयोग करें।

मक्का की खेती :-

- मक्का की शीघ्र पकने वाली संकर किस्मों जे.एच-3459, प्रकाश, पूसा संकर मक्का-5, विवेक संकर मक्का-27, एम.एम.एच.-113, एक्स-1123 जी (3342) तथा संकुल किस्मों आजाद उत्तम, प्रगति, गौरव, कंचन, सूर्या तथा शियाट्स मक्का-2 की बुवाई जून के अंत तक समाप्त करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 4-6 ग्रा0 ट्राइकोडर्मा प्रति किग्रा0 बीज अथवा 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करें।

सोयाबीन की खेती :-

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी.एस. 1024, पूसा-16, पी.एस.1042, जे.एस. 20-34, जे.एस. 20-98, पंत सोयाबीन-26, जवाहर सोयाबीन 20-116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.-2, जे.एस.-93-5, जे.एस.-72-44, जे.एस.-75-46, पूसा-20, जे.एस.-335, एम.ए.यू.एस.-47, एन.आर.सी.-37 तथा तराई क्षेत्र तथा भाभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.-262 की बुवाई उचित नमी तथा उचित तापमान पर करें।

तिल की खेती :-

- तिल की उन्नत किस्मों यथा गुजरात तिल-6, आर.टी.-346, आर.टी.-351, तरूण, प्रगति, शेखर, टा-78, टा-13, टा-12 तथा टा-4 बुवाई करें।

मूंगफली की खेती :-

- मूंगफली की कम अवधि वाली प्रजातियों चन्द्रा उपरहार, उत्कर्ष, एम-13, अम्बर, चित्रा (एम.ए.10), कौशल (जी.201), टी.जी. 37ए, प्रकाश (बैडब्.884) की बुवाई करें।
- मूंगफली फली की उन्नत व अधिक उपज वाली प्रजातियों यथा चित्रा, चन्द्रा, कौशल, प्रकाश, अम्बर, टी.जी.-37 ए, उत्कर्ष एवं दिव्या की बुवाई करें।

गन्ना की खेती :-

- शरदकालीन गन्ने की बुवाई हेतु जिन किसानों ने खेत खाली छोड़ रखा है उसमें ढ़ैचा की बुवाई करके 50 से 55 दिनों में पलट दें।
- गन्ने को गिरने को बचाने एवं अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने हेतु गन्ने की जड़ों पर यदि अभी तक मिट्टी नहीं चढ़ाई है तो अनुकूल मौसम होने पर मिट्टी चढ़ा दें।
- बसंतकालीन गन्ने में तीव्र वृद्धि हेतु नैनो यूरिया 2.5 मि.ली. एवं नैनो डी.ए.पी. 2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से खेत में नमी की दशा में गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत की ड्रेंचिंग करें।
- गन्ना फसल हेतु अधिक हानिकारक चोटीबेधक कीट की तृतीय पीढ़ी से बचाव हेतु यदि अभी तक उपचार नहीं किया है तो क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.7 एस.सी. की 375 मि.ली. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से गन्ने की लाईनों के पास डेचिंग करें।
- चोटीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप की दशा में क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150 मि.ली. कीटनाशक को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से ड्रेचिंग कर सिंचाई करें।
- गन्ने में पाइरीला कीट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण हेतु यदि खेत में परजीवी प्राकृतिक रूप से दिख रहे है तो खेत में नमी बनाये रखे तथा कीटनाशक का छिड़काव न करें।
- गन्ने में माइट कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफास 40 प्रतिशत+साइपर 4 प्रतिशत की 750 मि.ली. कीटनाशक को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु उर्वरक एन.पी.के. 19:19:19 की 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती :-

- फूलगोभी की अगेती किस्में अर्ली कुवारी, पूसा अर्ली सेंथेटिक, पंत गोभी-3, पूसा दीपाली आदि किस्मों का 500-600 ग्राम बीज प्रति हे0 की दर से नर्सरी तैयार कर लें।
- भिण्डी की खरीफ (वर्षा ऋतु में) के मौसम में बुआई के लिए 10 जुलाई तक का समय उपयुक्त माना जाता है। इसकी बीज दर 10-12 किग्रा. प्रति हे0 तथा संकर किस्मों के लिए 5-8 किग्रा. बीज पर्याप्त है।
- खरीफ प्याज की नर्सरी तैयार करने के लिए पौधशाला मे खरीफ प्याज की बुआई करें। एक हे0 प्याज फसल के लिए 8-10 किग्रा. बीज पर्याप्त होता है।
- खरीफ ऋतु की अगेती सब्जियों के बीज को ट्राईकोडर्मा पाउडर 5-6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
- लोबिया की खेती के लिए 15-20 किग्रा. बीज प्रति हे0 की दर पर्याप्त होती है। बुआई करने से पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचार करके बुआई करना चाहिए।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- पौधशाला हेतु ऊंचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिए 7.5 मीटर लम्बा 1 मीटर चैड़ा और 10-15 से.मी. ऊंचा स्थान बनाना चाहिए।

बागवानी :-

- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर टैप 8-10 ट्रैप प्रति हे0 में 6 से 8 फिट की ऊँचाई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20-25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिए।
- आम में परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8-10 मि.मी. डंठल सहित तुड़ाई की जानी चाहिए।

- आम को एक सार पकाने के लिए 750 पी.पी.एम. इथरेल (1.8 मि.ली./लीटर) गुनगुने पानी (52±20 से.) के घोल में 5 मिनट तक डुबोकर तदोपरान्त छांव में सुखाने के बाद भण्डारण करना चाहिए। इसी में (0.5 ग्रा./लीटर) कार्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल मिलाने से अन्य फफूंदी भी नष्ट हो जाती है और आम अच्छा पकता है।
- केले के नवीन बाग लगाने हेतु ऊतक संवर्धित रोगरोधी जी-9 प्रजाति लगाये। केले के पुराने बागों में पौधो में सहारा लगायें।

पशुपालन :-

- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत गलाघोंटू बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें |
- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- वर्तमान समय में खरीफ चारा फसलों की बुवाई प्रारंभ हो गई है। सभी कृषक/पशुपालक खरीफ चारा फसलों यथा ज्वार, बाजरा, लोबिया, मक्का आदि की बुवाई समय से करें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0-1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मत्स्य पालन :-

- भारतीय/विदेशी कार्प मछलियों का प्रजनन प्रारम्भ कर दें।
- ग्रो आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000-4000 प्रति एकड़ की दर से शुरू कर दें।
- मत्स्य बीज परिवहन दिन के कम तापमान वाले समय में करें।
- मौसम खराब रहने यानि अत्यधिक गर्मी, आद्रता, वर्षा रहने पर भोजन का प्रयोग आधा कर दें।
- जुलाई माह में वर्षा का मौसम एवं आद्रता अधिक होने के कारण तालाब के पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा काफी कम हो जाने की संभावना बनी रहती है, जिससे मछली तालाब के ऊपरी सतह पर आकर मरने लगती है। इसके बचाव के लिए शाम एवं सवेरे 4-4 घंटा एयरेटर या पंप से पानी को चलाएँ अथवा ऑक्सीजन बढ़ाने वाली दवा यथा आटूमैक्स या एडऑक्सी या ऑक्सीग्रो का प्रयोग 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से सुखा छिड़काव करें।
- बूरडर तालाब में पूरक आहार का प्रयोग मछली के कुल शरीर भार का 2 से 3 प्रतिशत की दर से करें।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने हैचरी से रोहु, कतला, मृगल, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प एवं सिल्वर कार्प को स्पॉन का उत्पादन गहन प्रबंधन से करना चालू रखें।
- नर्सरी तालाब में स्पॉन डालने के 15 दिनों के बाद ही रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करें।
- मत्स्य पालक किसान बन्धु अपने तालाब में फिंगरलिंग 6,000-8,000 प्रति एकड़ या ईयरलिंग 2,000-4,000 प्रति एकड़ की दर से अपने तालाब में डालकर पालन सुनिश्चित करें।
- तालाब में चूने का प्रयोग 15 दिनों के अन्तराल पर पी.एच. मान के अनुसार 10-15 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से करें।
- माह में एक बार जैविक खाद के रूप में गोबर 400 कि.ग्रा. प्रति एकड़ या सरसों/राई की खली 100 कि.ग्रा./एकड़ एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट 15-20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें। रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के बीच का अन्तराल कम से कम 15 दिन होना चाहिए।
- संचयन 2000-4000 प्रति एकड़ की दर से जून के अंतिम सप्ताह में शुरू कर दें।

वानिकी :-

- गड्ढा भरान यथाशीघ्र पूर्ण कर लें। वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य प्रारंभ करें।
- पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक पौधों को खुले क्षेत्र में रखें।

राज्य कृषि मौसम सेवा अनुभाग
मौसम विज्ञान केंद्र,
लखनऊ

भारत सरकार/Govt. of India
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय/Ministry of Earth Sciences
भारत मौसम विज्ञान विभाग/India Meteorological Department
मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ/Meteorological Centre Lucknow

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

कृषि पर मौसम के प्रभाव आधारित पूर्वानुमान एवं सुझाव

भारी से बहुत भारी वर्षा			
फसल	**अवस्था**	**फसल पर असर पड़ने की संभावना**	**सलाह**
जायद मक्का	दाना सशक्त होने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	भारी बारिश के कारण खड़ी फसलें गिर जाती हैं और जलभराव हो जाता है, जिससे फसलों को नुकसान होता है और पैदावार कम हो जाती है।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। कटी हुई उपज को सुरक्षित स्थान पर रखें। कटी हुई उपज/फसल को खेत में ऊंचे स्थान पर रखकर पॉलीथीन शीट से ढक दें। वर्षा के बाद फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए।
उर्द	दाना भरने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	भारी बारिश से खड़ी फसलों में पानी भर जाता है और बीज फलियों के अंदर सड़ जाते हैं, जिससे फसल को नुकसान होता है और उपज कम हो जाती है।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। कटी हुई उपज को सुरक्षित स्थान पर रखें। कटी हुई उपज/फसल को खेत में ऊंचे स्थान पर रखकर पॉलीथीन शीट से ढक दें। वर्षा के बाद फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए।
मूँग	दाना भरने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	भारी बारिश से खड़ी फसलों में पानी भर जाता है और बीज फलियों के अंदर सड़ जाते हैं, जिससे फसल को नुकसान होता है और उपज कम हो जाती है।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। कटी हुई उपज को सुरक्षित स्थान पर रखें। कटी हुई उपज/फसल को खेत में ऊंचे स्थान पर रखकर पॉलीथीन शीट से ढक दें। वर्षा के बाद फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए।
मूँगफली	फली में दाना भरने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	भारी बारिश से खड़ी फसलों में पानी भर जाता है और बीज फलियों के अंदर सड़ जाते हैं, जिससे फसल को नुकसान होता है और उपज कम हो जाती है।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। कटी हुई उपज को सुरक्षित स्थान पर रखें। कटी हुई उपज/फसल को खेत में ऊंचे स्थान पर रखकर पॉलीथीन शीट से ढक दें। वर्षा के बाद फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए।
सूरजमुखी	बीज का विकास से परिपक्वता अवस्था	भारी बारिश के कारण खेत में खड़ी फसलें गिर जाती हैं और सूरजमुखी के फसलों में छत्तो के अंदर ही बीज अंकुरित/सड़ जाता हैं, जिससे फसल को नुकसान होता है और उपज कम हो जाती है।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। कटी हुई उपज को सुरक्षित स्थान पर रखें। कटी हुई उपज/फसल को खेत में ऊंचे स्थान पर रखकर पॉलीथीन शीट से ढक दें। वर्षा के बाद फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए।
गन्ना	किल्ले निकलने की अवस्था	भारी बारिश के कारण जलभराव हो जाता है, जिससे फसलों का विकास रुक जाता है।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। सिंचाई का कार्य स्थगित रखें।
खरीफ मक्का	बुवाई से बीज का जमीन से ऊपर निकलने की अवस्था	जल भराव के कारण खराब अंकुरण/जमाव।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। जल निकासी का उचित प्रबन्ध करें और भारी वर्षा के दौरान बुवाई से बचें। खेतों में नमी बनायें रखें।
धान/चावल	रोपाई	जलभराव के कारण नर्सरी क्षतिग्रस्त	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। भारी वर्षा के दौरान धान की नर्सरी की रोपाई से बचें।

अरहर	बुवाई	जल भराव के कारण खराब अंकुरण/जमाव।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। जल निकासी का उचित प्रबन्ध करें और भारी वर्षा के दौरान बुवाई से बचें। खेतों में नमी बनायें रखें।
तिल	बुवाई	जल भराव के कारण खराब अंकुरण/जमाव।	खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा के पानी को बाहर निकाल दें। जल निकासी का उचित प्रबन्ध करें और भारी वर्षा के दौरान बुवाई से बचें। खेतों में नमी बनायें रखें।
सब्जी फसलें	वनस्पति/पुष्पन/फलन /कटाई/तुड़ाई	भारी बारिश और जल-भराव हो जाने के कारण फसल सड़/क्षतिग्रस्त/सुख जाती है, जिससे फसलों को काफी नुकसान हो जाता है।	भारी वर्षा के दौरान सिंचाई का कार्य स्थगित रखें।खड़ी फसलों से अत्यधिक वर्षा जल को बाहर निकाल दें।
आम/केला/ पपीता	फलन/कटाई	भारी बारिश और जलभराव के कारण केले और पपीते के बागों में पौधे गिरकर क्षतिग्रस्त/सूख जाते हैं, जिससे उत्पादन पर काफी असर पड़ता है।	भारी वर्षा के दौरान सिंचाई का कार्य स्थगित रखें। केला एवं पपीता के बागों से अत्याधिक वर्षा जल को बाहर निकालने का उचित प्रबन्ध निकाल दें।

तेज झोंकेदार हवाएं			
फसल	**अवस्था**	**फसल पर असर पड़ने की संभावना**	**सलाह**
जायद मक्का	दाना सशक्त होने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	हवा की तेज गति के कारण फसल गिर जाती है जिससे पैदावार का भारी नुकसान होता है।	किसानों को सलाह दी जाती है कि पक चुकी फसल की कटाई कर लें और बंडल बांध लें। कटी हुई फसल/उपज को खेत में न छोड़ें।
उर्द	दाना भरने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	तेज हवा के कारण कटी हुई फसल खेत में बिखर जाती है। जिससे उपज पर काफी असर पड़ता है।	किसानों को सलाह दी जाती है कि पक चुकी फसल की कटाई कर लें और बंडल बांध लें। कटी हुई फसल/उपज को खेत में न छोड़ें।
मूँग	दाना भरने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	तेज हवाओं के कारण खेत में खड़ी फसलों की नमी जल्दी खत्म हो जाती है। जिससे फसलों में सिंचाई की आवश्यकता बढ़ जाती है।	किसानों को सलाह दी जाती है कि पक चुकी फसल की कटाई कर लें और बंडल बांध लें। कटी हुई फसल/उपज को खेत में न छोड़ें।
मूँगफली	फली में दाना भरने की अवस्था से परिपक्वता अवस्था	तेज हवाओं के कारण खेत में खड़ी फसलों की नमी जल्दी खत्म हो जाती है। जिससे फसलों में सिंचाई की आवश्यकता बढ़ जाती है।	किसानों को सलाह दी जाती है कि पक चुकी फसल की कटाई कर लें और बंडल बांध लें। कटी हुई फसल/उपज को खेत में न छोड़ें।
सूरजमुखी	बीज का विकास से परिपक्वता अवस्था	तेज हवाओं के कारण खेत में खड़ी फसलों में नमी की मात्रा जल्दी खत्म हो जाती है। जिससे फसलों में सिंचाई की आवश्यकता बढ़ जाती है .	किसानों को सलाह दी जाती है कि पक चुकी फसल की कटाई कर लें और बंडल बांध लें। कटी हुई फसल/उपज को खेत में न छोड़ें।
गन्ना	किल्ले निकलने की अवस्था	तेज हवाओं के कारण खेत में खड़ी फसलों में नमी की मात्रा जल्दी खत्म हो जाती है। जिससे फसलों में सिंचाई की आवश्यकता बढ़ जाती है।	तेज हवा चलने पर खड़ी फसल में कीटनाशक, रोगनाशी और उर्वरकों का छिड़काव नहीं करना चाहिए। छिड़काव तभी करना चाहिए जब हवा शांत हो। खेतों में उचित नमी बनायें रखें।
खरीफ मक्का	बुवाई से बीज का जमीन से ऊपर निकलने की अवस्था	तेज हवाओं के कारण खेत में खड़ी फसलों की नमी जल्दी खत्म हो जाती है। जिससे फसलों में सिंचाई की आवश्यकता बढ़ जाती है।	तेज हवा चलने की संभावना होने पर सिंचाई न करें। खड़ी फसलों में सिंचाई एवं किसी भी प्रकार का रासायनिक छिड़काव हवा शान्त होने पर ही करना चाहिए।

धान/चावल	रोपाई	तेज हवाओं के कारण खेत में खड़ी फसलों की नमी जल्दी खत्म हो जाती है। जिससे फसलों में सिंचाई की आवश्यकता बढ़ जाती है।	तेज हवा चलने पर खड़ी फसल में कीटनाशक, रोगनाशी, खरपतवारनाशी और उर्वरक का छिड़काव नहीं करना चाहिए। छिड़काव तभी करना चाहिए जब हवा शांत हो। खेतों में उचित नमी बनायें रखें।
अरहर	बुवाई	तेज हवाएं वाष्पीकरण दर को बढ़ाती हैं, जिससे अंकुरण प्रतिशत कम हो जाता है।	खेतों में उचित नमी बनायें रखें।
तिल	बुवाई	तेज हवाएं वाष्पीकरण दर को बढ़ाती हैं, जिससे अंकुरण प्रतिशत कम हो जाता है।	खेतों में उचित नमी बनायें रखें।
सब्जी फसलें	वनस्पति/पुष्पन/फलन /कटाई/तुड़ाई	तेज हवाओं के कारण खेतों से नमी जल्दी खत्म हो जाती है। तेज हवाओं के कारण खेतों में खड़ी सब्जिओं की फसलें गिर जाती हैं और फूल झड़ जाते हैं। जिससे उत्पादन में कमी आ जाती है।	तेज हवा चलने की दशा में खड़ी फसलों में सिंचाई व किसी भी तरह के केमिकल, उर्वरक का छिड़काव न करें, हवा शांत होने पर ही सिंचाई व केमिकल का छिड़काव करें।
आम/केला/ पपीता	फलन/कटाई	हवा की तेज़ गति के कारण केले/पपीते के पौधों के गिरने की संभावना बढ़ जाती है और जिसके कारण फलों की पैदावार प्रभावित हो जाती है।	तेज हवा चलने की दशा में खड़ी फसलों में सिंचाई व किसी भी तरह के केमिकल, उर्वरक का छिड़काव न करें, हवा शांत होने पर ही सिंचाई व केमिकल का छिड़काव करें।

मेघगर्जन/आकाशीय बिजली/(वज्रपात)झोंकेदार हवाएं	
प्रभाव	**सुझाव**
दृश्यता में कमी	घर के अंदर रहें, खिड़कियाँ और दरवाज़े बंद रखें और अगर संभव हो तो यात्रा करने से बचें।
विद्युत व्यवस्था में व्यवधान	बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को अनप्लग करें।
यातायात प्रवाह में व्यवधान	वाहन चलते समय सावधानी रखें।
प्रॉपर्टी को नुकसान :इमारतों कमजोर संरचनाओं, कच्चे ,घरों/दीवारों और झोपड़ियों को नुकसान हो सकता है। खिड़कियाँ टूट सकती हैं और छतें क्षतिग्रस्त हो सकती हैं। हल्की वस्तुएं उड़ सकती हैं।	सुरक्षित आश्रय लें, पेड़ों के नीचे आश्रय न लें। कंक्रीट के फर्श पर न लेटें और कंक्रीट की दीवारों से न टिकें।
फसलों को नुकसान :मेघगर्जन वज्रपात/झोंकेदाए/हवाओं से बागान, बागवानी और खड़ी फसलों को नुकसान हो सकता है।	जलस्रोतों से तुरंत बाहर निकलें।
विमान को नुकसान :मेघगर्जन एवं आकाशीय बिजली से विमान को गंभीर नुकसान हो सकता है।	बिजली का संचालन करने वाली सभी वस्तुओं से दूर रहें।
पशुधन वन्य ,जीवन और जनजीवन को क्षति : खुले स्थानों पर लोगों, मवेशियों और वन्यजीवों को गंभीर चोट लग सकती है, घायल भी हो सकते हैं या उनकी मृत्यु भी हो सकती है।	घर में रहें, खिड़कियाँ और दरवाजे बंद रखें और यदि संभव हो तो यात्रा , से बचें।

भारत सरकार/Govt. of India
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय/Ministry of Earth Sciences
भारत मौसम विज्ञान विभाग/India Meteorological Department
मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ/Meteorological Centre Lucknow

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

मौसमकेंद्र, लखनऊ - IMD Uttar-Pradesh
@CentreLucknow

https://x.com/CentreLucknow

मौसमकेंद्रलखनऊ - IMD Uttar-Pradesh
@mclucknow

https://www.facebook.com/mclucknow

YouTube

मौसमकेंद्र, लखनऊ- IMD Uttar-Pradesh
@imd-lucknow

https://youtube.com/@imd-lucknow?si=lQ7-NpP68QFmZ_Du

Please download the following apps for latest weather alerts

Mausam App
Get Latest Weather Updates

Android
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.imd.masuam&pcampaignid=web_share

Apple Ios
https://apps.apple.com/us/app/mausam/id1522893967

Android ple iOS

Meghdoot App
Get Latest Weather Updates for Agriculture

Android
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.aas.meghdoot&pcampaignid=web_share

Apple Ios
https://apps.apple.com/in/app/meghdoot/id1474048155

Android Apple iOS

Damini App
Lightning Alerts, Live Lightning near you and in India

Android
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.lightening.live.damini&pcampaignid=web_share

Apple Ios
https://apps.apple.com/app/id1502385645

Android \pple iOS